नायक कृष्ण का चरित्र-चित्रण

उत्तर : पं० रामबहोरी शुक्ल द्वारा रचित '**अग्रपूजा**' खण्डकाव्य के नायक श्रीकृष्ण हैं। वे ही खण्डकाव्य के सम्पूर्ण कथानक के केन्द्र-बिन्दु हैं। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) सौन्दर्य के प्रतीक—श्रीकृष्ण का मुखमण्डल अत्यन्त आकर्षक तथा तेजवान् है। वे जहाँ कहीं भी पहुँचते हैं, जनता का समूह उन्हें देखने के लिए उमड़ पड़ता है। इन्द्रप्रस्थ पहुँचने पर नगरवासी उनके सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाते हैं। इन्द्रप्रस्थ की नारियों में श्रीकृष्ण के भव्य रूप की इस प्रकार चर्चा होती है—

देखा सुना न पढ़ा कहीं भी, ऐसा अनुपम रूप अनिन्द।
ऐसी मृदु मुस्कान न देखी, सचमुच गोविन्द सम गोविन्द॥

(2) साहसी तथा निर्भीक—श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व में निर्भीकता कूट-कूटकर भरी हुई है। पाण्डवों के राज्य की स्थापना करने में उनका अदम्य साहस प्रकट होता है। उसी प्रकार जरासन्ध का वध करने तथा शिशुपाल का भरी-सभा में शीश काटने में भी श्रीकृष्ण अपनी निर्भीकता का परिचय देते हैं।

(3) शिष्ट तथा शीलवान्—श्रीकृष्ण अपने से बड़ों के सम्मुख सदैव नतमस्तक रहते हैं। वे कुन्ती के चरणों को स्पर्श करने में गौरव का अनुभव करते हैं, ब्राह्मणों के पैर स्वयं धोते हैं और अकारण किसी पर क्रोध नहीं करते। वे अपने शुभचिन्तकों को सद्परामर्श देनेवाले हैं। वस्तुत: श्रीकृष्ण की नम्रता, उदारता तथा मानवता की भावनाएँ देखने योग्य हैं।

(4) धैर्यवान् तथा सहनशील—श्रीकृष्ण धैर्य के भण्डार हैं। सहनशीलता उनमें कूट-कूटकर भरी हुई है। भरी-सभा में शिशुपाल के कटुवचन सुनकर भी वे अपना धैर्य नहीं छोड़ते—

"बैठे रहे कृष्ण मुस्काते, विचलित हुए न सब सुन देख।"

अपने ऊपर आक्रमण होता देखकर भी वे शान्त मन से बैठे रहते हैं। मर्यादा का अतिक्रमण होने के बाद ही वे वीरता दिखाने के लिए तत्पर होते हैं।

(5) असामान्य शक्ति-सम्पन्न—श्रीकृष्ण अत्यधिक शक्तिमान् हैं। वे शस्त्र संचालन में भी अत्यन्त निपुण हैं। शिशुपाल का वध वे इतनी शीघ्रतापूर्वक करते हैं कि कोई उनके सुदर्शन चक्र को चलता हुआ भी देख नहीं पाता। वे शिशुपाल को सचेत करके ही उस पर प्रहार करते हैं।

(6) सर्वगुण-सम्पन्न अलौकिक पुरुष—'गीता' में प्रदर्शित श्रीकृष्ण के चरित्र एवं व्यक्तित्व को ही 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य में प्रस्तुत किया गया है। उनके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में स्वयं भीष्म का कथन श्रीकृष्ण के विशद् चरित्र पर प्रकाश डालता है। भीष्म कहते हैं—"श्रीकृष्ण महामानव हैं, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे रहनेवाले हैं। संसार में रहकर भी वे अनासक्त तथा कर्मयोगी हैं। उनमें रूप, शील तथा शक्ति का अनुपम भण्डार है। योग तथा भोग से पूर्ण इनका व्यक्तित्व अनूठा उदाहरण है। श्रीकृष्ण सज्जनता, विनय, प्रेम तथा उदारता के पुंज हैं।"

अस्तु: इसमें सन्देह नहीं कि श्रीकृष्ण का चरित्र आदर्शमय तथा अत्यन्त महान है।

शिशुपाल का चरित्र- चित्रण

उत्तर : पं० रामबहोरी शुक्ल द्वारा रचित '**अग्रपूजा**' खण्डकाव्य में शिशुपाल का चरित्र एक प्रमुख खलनायक पात्र के रूप में चित्रित किया गया है। शिशुपाल का चरित्र-चित्रण इस प्रकार किया जा सकता है—

(1) श्रीकृष्ण का शत्रु—शिशुपाल चेदि राज्य का स्वामी है। श्रीकृष्ण से उसकी पुरानी शत्रुता है। वह रुक्मिणी से विवाह करना चाहता था, परन्तु रुक्मिणी हृदय से श्रीकृष्ण का वरण कर चुकी थी; अत: श्रीकृष्ण रुक्मिणी को ले आए और द्वारका आकर रुक्मिणी से विधिवत् विवाह सम्पन्न किया। तभी से शिशुपाल श्रीकृष्ण से शत्रुता रखने लगा।

(2) अशिष्ट तथा अविनीत—शिशुपाल भरी-सभा में छोटे तथा बड़ों के प्रति शिष्टतापूर्वक बोलना भी नहीं जानता। अग्रपूजा के लिए सहदेव द्वारा श्रीकृष्ण का नाम प्रस्तावित होने पर शिशुपाल सहदेव से कहता है कि वह छोटे मुँह से बड़ी बात कहता है और उसमें लड़कपन शेष है। इतना ही नहीं, शिशुपाल भीष्म के लिए भी अपमानजनक शब्द कहता है—

लगता सठिया गए भीष्म हैं, मारी गई बुद्धि भरपूर।
तभी अनर्गल बातें करते हैं, करो यहाँ से इनको दूर॥

(3) अत्यधिक ईर्ष्यालु—शिशुपाल स्वभाव से अत्यधिक ईर्ष्यालु है। इन्द्रप्रस्थ में श्रीकृष्ण के सम्मान को देखकर वह ईर्ष्या की अग्नि में जलने लगता है। शिशुपाल को सभी राजाओं द्वारा श्रीकृष्ण का अधिक सम्मान करना काँटे की तरह चुभता है। वह अकारण ही श्रीकृष्ण के प्रति जहर उगलने लगता है और उनको नाचने-कूदनेवाला, मायावी, अनीतिज्ञ तथा कृतघ्न बतलाता है। श्रीकृष्ण का अपमान करते हुए वह इन शब्दों के साथ अपने मन को हल्का करता है—

आज यहाँ हैं ज्ञानी योगी, पण्डित, ऋषि, नृप, अनुपम वीर।
फिर भी अग्र अर्चना होगी, उसकी जो गोपाल अहीर॥

(4) क्रोधी तथा अभिमानी—ईर्ष्यालु, अशिष्ट तथा निन्दक होने के अतिरिक्त शिशुपाल अत्यन्त क्रोधी तथा अभिमानी भी है। भीष्म के उपदेश तथा सहदेव की कूटनीति का उस पर कोई प्रभाव नहीं होता। वह तो राजाओं की सभा में श्रीकृष्ण की ओर घूँसा तानकर बढ़ता है और अभिमान में आकर उन्हें बुरा-भला कहता है—

वह बोला—'मायावी, छलिया, इन्द्रजाल अब करके बन्द।
आ सम्मुख, तू बच न सकेगा, करके ये सारे छल-छन्द॥'

वस्तुत: शिशुपाल के चरित्र में दोष-ही-दोष हैं। वह खलनायक की भूमिका को भली प्रकार निभाता है।

यधिष्ठिर, जरासंध, ध्रतराष्ट्र का चरित्र

उत्तर : युधिष्ठिर—युधिष्ठिर ज्येष्ठ पाण्डव हैं। सत्य और निष्ठा के साथ अपने कर्त्तव्यों और धर्म का निर्वाह करना उनके चरित्र की महती विशेषताएँ हैं, इसीलिए उन्हें धर्मराज भी कहा जाता है। नारदजी के परामर्श पर ये राजसूय-यज्ञ का विचार करते हैं। इसके लिए वे श्रीकृष्ण से विचार-विमर्श करते हैं। श्रीकृष्ण उन्हें परामर्श देते हैं कि यज्ञ तभी पूर्ण हो सकता है, जब जरासन्ध मारा जाए। जरासन्ध की मृत्यु के पश्चात् यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में श्रीकृष्ण की अग्रपूजा की जाती है, जिससे शिशुपाल कुपित हो जाता है। अन्त में श्रीकृष्ण उसका वध कर देते हैं। युधिष्ठिर उसके पुत्र का राज्याभिषेक करके यज्ञ को पूर्ण करते हैं।

जरासन्ध—'अग्रपूजा' खण्डकाव्य में जरासन्ध को एक मदमत्त घमण्डी राजा के रूप में चित्रित किया गया है। श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर उसके इस स्वभाव से भली-भाँति परिचित हैं। इसीलिए राजसूय यज्ञ आरम्भ करने से पूर्व उसके वध की योजना बनाई जाती है। युधिष्ठिर से अनुमति प्राप्त करके अर्जुन, श्रीकृष्ण तथा भीम जरासन्ध के पास पहुँचते हैं। वहाँ जरासन्ध का भीम के साथ तेरह दिन तक द्वन्द्वयुद्ध होता है। अन्ततः भीम उसको टाँगों के बीच से चीरकर उसका वध कर देते हैं।

धृतराष्ट्र—धृतराष्ट्र कौरवों के पिता और जन्मान्ध हैं। दुर्योधन आदि समस्त कौरव पाण्डवों से ईर्ष्या करते हैं और उन्हें मारने का षड्यन्त्र रचते रहते हैं। पाण्डवों के वनवास का भी यही कारण था। द्रौपदी से विवाह के पश्चात् जब पाण्डव अपना राज्य माँगते हैं तो धृतराष्ट्र एक कुशल राजनीतिज्ञ की भाँति भीष्म, विदुर आदि से विचार-विमर्श करके आधा-आधा राज्य दोनों में बाँटने का निर्णय लेते हैं। वे पाण्डवों को बुलाकर युधिष्ठिर का राज्याभिषेक कर देते हैं। पाण्डव खाण्डव वन में आकर इन्द्रप्रस्थ का निर्माण करके राजसूय यज्ञ पूर्ण करते हैं।